राजस्थान विधान सभा की कार्यवाही का वृत्तान्त

अंक 7] पंचम् विधान सभा के सप्तम सत्र का 31 वां दिवस [संख्या 23

बुधवार

19 मार्च, 1975

विधान सभा की बैठक म. पू. 11.00 बजे विधान सभा भवन, जयपुर में प्रारम्भ हुई।

(श्री रामकिशोर व्यास, अध्यक्ष पदासीन)

शोकाभिव्यक्ति एवं श्रद्धांजलि

श्री अध्यक्ष : माननीय मुख्य मंत्रीजी।

श्री हरिदेव जोशी (मुख्य मंत्री) : माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन की कार्यवाही प्रारम्भ हो उसके पहले मैं सदन को एक अत्यन्त ही खेदजनक घटना का समाचार देना चाहता हूं और वह यह है कि इस सदन के माननीय सदस्य एवं देवगढ़-भीम से निर्वाचित श्री चिम्मनसिंहजी भाटी का कल अकस्मात देहावसान हो गया।

अध्यक्ष महोदय, आज सवेरे अकस्मात ही मुझे यह जानकारी मिली कि श्री चिम्मनसिंह जी भाटी हमारे बीच में नहीं रहे। कल जैसी सूचना मिली, शाम को 7 और 8 बजे के बीच में उनकी हृदयगति रुक जाने से देहावसान हो गया।

अध्यक्ष महोदय, परसों वे यहां पर थे और उन्होंने सदन की कार्यवाही में भाग लिया। इसलिए विश्वास नहीं होता था कि जो खबर मेरे पास आयी है वह सही है अथवा नहीं। मैंने कलेक्टर अजमेर से चाहा कि वे जानकारी प्राप्त करके शीघ्रातिशीघ्र सूचना देवें। उन्होंने इस दुर्भाग्यपूर्ण खबर की पुष्टि की है।

अध्यक्ष महोदय, श्री चिम्मनसिंहजी भाटी अपने क्षेत्र के काफी लोकप्रिय लोक सेवक थे। वे जवाजा पंचायत समिति के शुरू से प्रधान रहे और विधान सभा के पिछले चुनावों में वे उदयपुर जिले के देवगढ़-भीम निर्वाचन क्षेत्र से निर्वाचित होकर सदन के सदस्य चुने गये थे। यह बात यही दर्शाती है कि वे अपने लोगों में कितने लोकप्रिय थे।

श्री चिम्मनसिंहजी का इस प्रकार से उठ जाना एक अत्यन्त ही खेद पहुँचाने वाली और धक्का पहुँचाने वाली चीज है। बहुत सारी विगत हमारे पास में आ नहीं सकी हैं। इसलिए मैं इस स्थिति में नहीं हूं कि उनकी बीमारी आदि के बारे में और भी विस्तार से कह सकूं। अध्यक्ष महोदय, यह घटना इतनी आकस्मिक हुई है और इस तरह से हुई है कि सदन के प्रत्येक माननीय सदस्य के मन को उसने गिरा दिया है। मैं दिवंगत आत्मा के प्रति अपनी श्रद्धांजलि अर्पित

(श्री हरिदेव जोशी)

करता हूं और परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करे एवं उनके शोक संतप्त परिवार को इस आकस्मिक झटके को बर्दाश्त करने की क्षमता प्रदान करे।

श्री गुमानमल लोढा (जोधपुर) : माननीय अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता महोदय ने श्री भाटी के आकस्मिक निधन पर शोकातुर सदन के अन्दर भाव विह्वल होकर जो भावनायें व्यक्त की हैं उनमें हम सब, सारा सदन, उनके साथ हैं।

अध्यक्ष महोदय, श्री चिम्मनसिंहजी अपने क्षेत्र में ही नहीं अपितु उनसे परिचित क्षेत्र में अत्यन्त मिलनसार, सहृदय, समाज सेवा करने वाले, व एक जीवट के कार्यकर्ता के नाते जाने जाते थे। उन्होंने अपने जीवन का अधिकतर समय समाज सेवा में लगाया था। अजमेर विधान सभा में भी वे अपनी लोकप्रियता एवं समाज सेवा के कारण ही चुने गये थे।

अध्यक्ष महोदय, हम बहुधा यह पढ़ते एवं सुनते आये हैं, विश्व के महान् दार्शनिकों के दर्शन शास्त्र में है कि जीवन क्षण-भंगुर है। लेकिन यहां पर इसी सदन में एक दिन पहले जिस आसन के ऊपर हमारे बीच में एक सदस्य सक्रिय रूप से विराजमान थे वे आज हमारे बीच में नहीं हैं। वे यहां से आकस्मिक रूप से लुप्त हो गये यह वास्तव में उस दर्शन शास्त्र की सत्यता को प्रकट करता है।

अध्यक्ष महोदय, राजनैतिक क्षेत्र में कार्य करते करते सामाजिक क्षेत्र में भी कार्य करते करते कई बार जीवन में ऐसे प्रसंग आते हैं जब हम इस दर्शन के अनुसार अपने आप अपना विचार करके शारीरिक व अन्य प्रकार मोह, लालसा आदि से क्षणिक रूप से विमुक्त होने का प्रयास करते हैं, ऐसा ही प्रसंग आज है।

मैं अपनी ओर से, समस्त विधायक, जो हमारी ओर के हैं, उनकी तरफ से सदन के माननीय नेता द्वारा जो श्रद्धांजलि अर्पित की गयी है उसमें अपनी भावना व्यक्त करता हूं और परम पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हूं कि दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करे एवं शोक संतप्त परिवार को आकस्मिक एवं दु:खद घटना को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

श्री निरंजननाथ आचार्य (मावली) : अध्यक्ष महोदय, इस मौके पर सदन की दर्दीली स्मृतियां, जिनकी अनुभूति हमें समय समय पर इसी प्रांगण में हुई है, जग जाती हैं। हमने श्री बरकतुल्ला साहब, भूतपूर्व मुख्य मंत्री को खोया, हमने श्री रोशनलाल जी शर्मा, श्री रामसिंहजी को खोया, और अब श्री चिम्मनसिंहजी को खोया है।

अध्यक्ष महोदय, यह दुर्घटना है, संयोग की विकृति है कि तीनों ही इस दुर्घटना के शिकार हुये। हम गीता के उस श्लोक को याद करते हैं:–

वासांसि जीर्णानि यथा विहाय,
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा,
न्यन्यानि संयाति नवानि देही॥

पुराने वस्त्रों को छोड़कर मनुष्य नये वस्त्र धारण करता है। उसी प्रकार व्यक्ति पुराने

(श्री निरंजननाथ आचार्य)

शरीर को छोड़कर नये शरीर को धारण करता है। लेकिन यहां यह स्थिति नहीं है। वे मंझदार में गये हैं, और मंझदार में जाने वाला व्यक्ति कभी पुराना नहीं समझा जाता है। इसकी वेदना भयंकर है। श्री चिम्मनसिंह भाटी शालीन, सहृदय और अपने क्षेत्र के लोकप्रिय व्यक्ति थे। हमारी स्मृतियां बड़ी सजीव हो जाती हैं जब सदन में उनके रिक्त स्थान को देखते हैं। वे सक्रिय सदस्य के रूप में हमेशा सदन में भाग लेते रहे। लगता है इस विधान सभा का काल महाकाल का रूप लेता जा रहा है। इस विधान सभा के काल में जितने भूतपूर्व और वर्तमान सदस्य स्वर्गवासी हुए, इतने विधायक स्वर्गवासी अब तक कभी नहीं हुए। सदन के नेता भाव विह्वल थे। स्वाभाविक हैं, उनका भाव विह्वल होना और हमारे लिये भी दर्द का होना स्वाभाविक है क्योंकि जिस क्षेत्र के माननीय सदस्य थे विशेष कर उस क्षेत्र के लोकप्रिय कार्यकर्ता, निष्ठावान कार्यकर्ता थे। जिनसे हमारा सम्पर्क बड़ा निकट का था। इसलिये इस दर्दीली बेला में, अध्यक्ष महोदय, उस दिवंगत आत्मा के प्रति मैं अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि उनके परिवार को इस असामयिक वेदना को सहने की शक्ति दें।

श्री **मोहम्मद गफ्फार अली** (जौहरी बाजार, जयपुर) : अध्यक्ष महोदय, सदन के नेता महोदय ने श्री चिम्मनसिंह भाटी के सम्बन्ध में जिस जज़बात का निवेदन किया है मेरी पार्टी उससे पूरी तौर से मुत्तफिक है। श्री चिम्मनसिंह से मेरा कोई पुराना सम्बन्ध तो नहीं था लेकिन इस सदन के एक सर्वप्रिय व्यक्ति की हैसियत से मुझे मिलने का इत्तफ़ाक हुआ। मैं समझता हूं उनके दिल में यह हमेशा लगन थी कि वे अपने क्षेत्र का भला किसी तरह करें। एक मर्तबा मैं उनके साथ सफर कर रहा था तो उन्होंने ब्यावर के पानी के संकट के बारे में कहा कि हमारी बड़ी दिक्कत है। उसी इलाके के वे रहने वाले थे और वे हमेशा प्रयत्नशील रहे कि उस इलाके का कुछ भला हो। जैसा सदन के नेता ने कहा, वे आरम्भ से जवाजा पंचायत के प्रधान रहे और यह उनके हर दिल अजीज होने का एक प्रमाण है। आज वे हमारे बीच में नहीं हैं। अध्यक्ष महोदय, यह एक अजीब दुर्घटना है कि एक के बाद एक सदमा इस सदन को पहुंचा है, इस सदन पर पहाड़ के पहाड़ टूट रहे हैं। लेकिन यह कोई इन्सान के बस की चीज नहीं है।

मैं मेरी पार्टी की ओर से उनकी मौत पर मातमपुरसी पेश करता हूं और मैं दुआ करता हूं कि उनके पास मानवेगान है वे इस सदमे को बर्दाश्त कर सकें और खुदा उनको बर्दाश्त करने की कुव्वत दे।

श्री **केदारनाथ** : मान्यवर, स्वर्गीय श्री चिम्मनसिंह भाटी एक गंभीर और शराफत भरे व्यक्ति थे और ऐसा व्यक्तित्व हमेशा याद रहता है। पिछले तीन साल से हमने उनको बहुत ही व्यवहार कुशल व्यक्ति के रूप में पाया है। जब कभी डिबेट में हिस्सा लेते थे तो उनका सारगर्भित भाषण हमको सुनने को मिलता था। मैं मेरे दल की ओर से उस दिवंगत आत्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं।

Page No.4

श्री अध्यक्ष : सदन के नेता महोदय ने तथा माननीय सदस्यों ने श्री चिम्मनसिंह भाटी के देहावसान के सम्बन्ध में जो भावनायें व्यक्त की हैं मैं उसमें अपने आपको सम्मिलित करता हूं। असल में जब आज सुबह टेलीफोन से उनके देहावसान की सूचना मिली, एक दफा तो यकीन नहीं हुआ क्योंकि परसों ही हम लोगों के बीच में वे थे और प्रश्न पूछ रहे थे। कोई बीमारी की खबर भी नहीं सुनी। अचानक इस तरह की खबर मिलने पर विश्वास नहीं हुआ लेकिन अजमेर से इस बात की पुष्टि हुई कि बात सही है। दुर्भाग्यवश ऐसी सूचनायें अपना एक स्थान रखती हैं। उनकी असामयिक मृत्यु पर सभी माननीय सदस्यों को खेद होना एक स्वाभाविक बात है।

इस विधान सभा और इससे पहले अजमेर राज्य की विधान सभा से उनका सम्बन्ध रहा है। सन् 1952 में वे अजमेर राज्य की विधान सभा के सदस्य रहे और उसके बाद सन् 1972 से इस सदन के सदस्य रहे हैं। वे टाटगढ़ के रहने वाले थे। बड़े संजीदा, गंभीर एवं सुलझे हुये इन्सान थे, यह आप लोगों ने उनकी बातचीत से और उनके बर्ताव से देखा होगा। सामाजिक कामों में वे काफी सक्रिय रहते थे। जवाजा पंचायत समिति के प्रधान रहे। वहां की सहकारी समितियों में भी काफी दिलचस्पी लेते रहे और सहकारी भूमि बैंक, ब्यावर के अध्यक्ष भी रहे। ऐसे कार्यरत माननीय सदस्य थे।

उनके निधन से बहुत गहरी वेदना हम सबको है लेकिन वेदना होते हुये भी इलाज कुछ नहीं। मौत निश्चित है और जितनी मौत निश्चित है उतनी ही कब मौत आ जाय यह अनिश्चित है। आयेगी मौत यह निश्चित है, लेकिन कब आयेगी, इस बारे में कुछ नहीं कहा जा सकता है। विज्ञान की पूर्ण उन्नति के बाद भी यह कहना बड़ा मुश्किल है कि कब मौत आयेगी। प्रकृति के नियम ही ऐसे हैं।

मैं आप सब के साथ भावना में सम्मिलित होकर उनकी दिवंगत आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं और प्रार्थना करता हूं कि उनके शोक संतप्त परिवार को भगवान शान्ति प्रदान करे। ऐसी मैं दुआ करता हूं कि खुदा जन्नत बख्शे, बहुत खूबियां थी मरने वाले में।

दो मिनिट के लिये हम लोग मौन खड़े होंगे।

(सदन ने दो मिनिट मौन खड़े रह कर दिवंगत श्री चिम्मन सिंह की आत्मा को श्रद्धांजलि अर्पित की)।

सदन की कार्यवाही कल दिनांक 20 मार्च, 1975 के प्रात: 11.00 बजे तक के लिये स्थगित की जाती है।

(तदनुसार सदन की कार्यवाही म. पू. 11.20 बजे बृहस्पतिवार, दिनांक 20 मार्च, 1975 के प्रातः 11.00 बजे तक के लिये स्थगित की गई।)